153
923
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1326
7.1.71

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 923

20-1
891.431
N 143P

उत्तिष्ठत, जाग्रत, प्राप्य वरान्य बोधत.

110 B

प्रभात फेरी

923

ग्राम सेवा संघ का तृतिय पत्रक

मूल्य केवल आध आना.

भवानी छापखाना हरदा.

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 923
Date 24.12.71
GOVT. OF INDIA

(राग बंगीय काफी) ॥ (ताल-दीपचंदी)

१ राष्ट्र गीत

वन्देमातरम्

सुजलां सुफलां मलयज शीतलाम्
शस्य श्यामलां मातरम् ॥ वन्दे० ॥१
शुभ्र ज्योत्स्ना पुल कित यामिनीम्
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुरभाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम् । वन्दे० ॥२
त्रिंशत्कोटि कन्ठ कलकल निनाद कराले
षष्ठिकोटि भुजै धृतिखर कर वाले
क बले मा तुमि अबले ?
बहुबल धारिणीम् । नमासितारिणीम्
पुदलवारिणीम् मातरम् । वन्दे० ॥

२ झण्डा वन्दन

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा । झन्डा ऊंचा रहे हमारा ॥
सदाशक्ति बरसाने वाला । प्रेमसुधा सरसाने वाला ।
वीरों को हर्षाने वाला । मातृ भूमिका तन मन सारा ॥ झंडा
स्वतंत्रता के भीषण रणमें । लखकर जोश बढे क्षणक्षण में ।
काँपेशत्रु देखकर मनमें । मिटजावे भय संकट सारा ॥झंडा
इस झण्डेके नीचे निर्भय । लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय
बोलो भारत माताकी जय । स्वतंत्रता है ध्येय हमारा ॥ झंडा
आओ प्यारे वीरों आओ । देश धर्मपर बलिबलि जाओ ।
एकसाथ सब मिलकर गाओ । प्यारा भारत देश हमारा झंडा

इसकी शान न जाने पावे। चाहे जान भले ही जावे।
विश्व विजय करके दिखलावे। तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ॥
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा। झण्डा ऊंचा रहे हमारा ॥

---

३ पताका नमन

राष्ट्र गगन का दिव्य ज्योति, राष्ट्रीय पताका नमो नमो।
भारत जननी के गौरव की, अविचल शाखा नमो नमो ॥
करमें लेकर इसे सूरमा, तीस कोटि भारत सन्तान।
हंसते हंसते मातृ भूमि के, चरणों पर होंगे बलिदान ॥
हो घोषित निर्भीक विश्व में, तरल तिरंगा नवल निशान।
वीर हृदय खिल उठे, मारलें भारतीय क्षण में मैदान ॥
हो नसनसमें व्याप्त चरित्र, सूरमा शिविका नमोनमो ॥ राष्ट्र
नवयुवकों स्वातंत्र्य समर में, नवजीवन संचार करो।
शस्त्र अहिंसा से दलकर, दासता दुर्ग का क्षार करो ॥
शांति क्रांति युग में हे वीरो, जीवन सुमन निसार करो।
ऊँचे स्वर से एक साथ, जननी की जय जय कार करो ॥
शक्ति देखकर शत्रु शिबिर में मचे सनाका नमोनमो ॥ राष्ट्र
उच्च हिमालय की चोटी पर, जाकर इसे उडायेंगे।
विश्व विजयिनि राष्ट्र पताका का, गौरव फहरायेंगे ॥
समरांगण में लाल लाडले, लाखों बलिबलि जायंगे।
सब से ऊंचा रहे, न इसको नीचे कभी झुकायेंगे ॥
गूँजे स्वर संसार सिंधु में स्वतंत्रता का नमो नमो ॥ राष्ट्र०

राग-झिंझोटी)   रवीन्द्रनाथ ठाकुर

४ आर्य मातृभूमि

आर्य मातृ भूमि तेरे, चरणों में सिर नमाऊं।
मैं भक्ति भेंट अपनी, तेरी शरण में लाऊं ॥१॥
माथे पै तूं हो चंदन, छाती पै तूं हो माला।
जिव्हा पै गीत तूं हो, मैं तेरा नाम गाऊं ॥२॥
जिसमें सुपूत उपजे, श्रीराम कृष्ण जैसे।
उस तेरी धूली को मै, निज शीस पै चढाऊं ॥३॥
मानी समुद्र जिसकी, धूलिका पान करके।
करता है मान तेरे, उस पैर को मनाऊं ॥४॥
वे देश मान वाले, चढकर उतर गये सब।
गोरे रहे ना काले, तुझको हि एक पाऊं ॥५॥
सेवा में तेरी सारे भेदों को भूल जांऊ।
वह पुण्य नाम तेरा, प्रतिदिन सुनु सुनाऊं ॥६॥
तेरे हि काम आऊं, तेरा ही नाम गाऊं।
मन और देह तुझपर, बलिदान मैं चढाऊं ॥७॥

---

५ हिन्दोस्ताँ हमारा

सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुलें हैं उसकी, वह बोस्तां हमारा॥
गुरबत में हो अगर हम रहता है दिल वतन में।
समझो वहीं हमें भी, दिल हो जहां हमारा॥
परवत वोह सबसे ऊंचा, हमसाये आसमां का।
वोह संतरी हमारा, वोह पासबां हमारा॥

गोदी में खेलती हैं, उसकी हजारों नदियां ।
गुलशन है जिनके दमसे, वोह रश्क जिना हमारा ॥
ऐ आबेरुदे गंगा, वोह दिन याद है तुझको ।
उतरा तेरे किनारे, जब कारवां हमारा ॥
मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर करना ।
हिन्दी हैं हम वतन हैं, हिन्दुस्ताँ हमारा ॥
यूनानों मिसरो रूमां; सब मिट गये जहाँ से ।
अब तक मगर है बाकी, नामो निशां हमारा ॥
कुछ बात है के हस्ती, मिटती नहीं हमारी ।
सदियों से रहा है दुश्मन, दबरे जमाँ हमारा ॥
इकबाल ! कोई महेरम अपना, नहीं जहां से ।
मालूम क्या किसी को, दर्दे निहाँ हमारा ॥

राग जोगिया)

६ जागो जागो

जागो जागो हे भारत वीरो, हुवा है प्रातःकाल ।
बहुत समयसे बेसुध होकर, पडे रहे तुम लोग ॥
धूर्त ठगों से अपने घर की, रखी नहीं संभाल ।
कपटी, कुटिल, क्रूर शत्रु हैं लूट रहे धन धाम ॥
तुम्हें फंसानेके हित कैसा फैलाया है यह जाल ।
निरपराध गौओं बछडों के काट रहे हैं शीस ।
लूट लूट संपत्ति तुम्हारी, हुए हैं माला माल ॥
जागो आंख खोलकर अबभी दशा सुधारो अपनी ।
सफल जगतमें भारतमा का फिर चमका दो भाल ॥

राग जंगला)

७ जगादो भारत को भगवान !

बिहार जागे, उत्कल जागे, जागे वंग महान ।
कर्नाटक गुजरात मराठा सिन्ध पठान-स्थान ॥
काश्मीर पंजाब अवध बृज प्रिय नैपाल भुतान ।
महा कुशल मालवा मलयालभ असम् राजस्थान ॥
मैं तेलगु तू तामिल इसका रहे ना भान ।
गंगा यमुना सम मिल जावे, सब भारत सन्तान ॥
बाल-वृद्ध युवकों के मुखपर, होवे मृदु मुसकान ।
मिल करके सब सत्यभावसे, करें प्रेम रस पान ॥
ब्राह्मण हो तेजस्वी त्यागी गौतम कपिल समान ।
तन्मय हो मृदुस्वर से गावें सामदेव का गान ॥
क्षत्रिय हो विक्रम प्रताप से रणबांके बलवान ।
स्वतंत्रा हित करें निछावर, हंस हंसके निज प्राण ॥
भामाशाह सामान वैश्य हो करे देशहित दान ।
शूद्र बने रैदास भगत से कबीर से मतिमान ॥
मुस्लिम हो दाराशिका हसे, सिख औ खिस्तान ।
जैन पारसी मूल निवासी, बोध्दोंका हो सन्मान ॥
सावित्री सीता दमयन्ती, फिरसे प्रगटे आन ।
दुर्गावति लक्ष्मीबाई की चमके चपल कृपाण ।
बालक ध्रुव प्रल्हाद सदृश हो, धरे तुम्हारा ध्यान ॥
वीर अभिमन्यु सम हो जावे धर्म हेतु बलिदान ।

८ भारत के शेर जागो

भारतके शेर जागो बदला है अब जमाना।
प्यारे वतन को इसदम आजाद है बनाना॥
मत बुजदिली को हरगिज तुम पासदो फटकने।
आखिर तो दम अदमका होगा कभी रवाना॥
स्वतंत्र देवी के तुम जल्दी बनो उपासक।
निज पूर्बजों का तुमको गर नाम है चलाना॥
परदेशियों का इसदम जो साथ दे रहे हैं।
उनको हराम है अब भारत का अन्न खाना॥

---

९ सरफरोशी की तमन्ना.

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है॥
रहबरे राहे मोहब्बत रह न जाना राह में।
लज्जते सहराना वर्दी दूरिये मंजिल में है॥
वख्त आने दे बतादेंगे, तुझे ऐ आसमाँ।
हम अभीसे क्या बतायें क्या हमारे दिलमें है॥
आज मकतल में यह कातिल कह रहाथा बारबार।
क्या तमन्नाए शहादत भी किसी के दिल में है॥
ऐ शहीदों मुल्को मिल्लत मैं तेरे ऊपर निसार।
अब तेरी हिम्मत का चर्चा गैर की महफिल में है॥
अब न अगले बलबले हैं औ' न अरमानों की भीड़।
एक मर मिटनेकी हसरत अब दिले बिस्मिल में है॥

---

१० सेवा में तेरी भारत

सेवा मे तेरी भारत, तनमन लगायंगे हम
फिर स्वर्ग का सहोदर तुझको बनायंगे हम
तुझसे हुए तुहीने, पालन किया हमारा
उपकार जितने करता, क्या क्या गिनायंगे हम
तेरे ऋणों का बोझा, सरपर धरा हमारे
करके प्रयत्न पूरा, उसको चुकायंगे हम
तेरे लिये जियंगे, तेरे लिये मरेंगे
तेरी हि सेवा में यह जीवन बितायंगे हम
घनघोर दुःख घटाभी हमपर घिरी खडी हो
क्षणमात्र भी न तुझको जी से भुलायंगे हम
जबजब मरें तुझी में तब तब सदा जनम ले
मरते वख्त ईश्वर से यह मनायंगे हम
गौरव गिरा है तेरा दुख्ने है तुझको घेरा
दुःख में तेरे दुखी हो आंसू बहायंगे हम
प्यारे सुहावन तिहारे फूट और मद के मारे
बेहोश ज़ो पडे हैं उनको जगायंगे हम
परमेश हा हमें अब पूरन पुनीत बल दो
बिन आपके सहारे कुछ कर न पायंगे हम

११ आजाद होगा होगा

भारत न रह सकेगा, हरगिज गुलाम खाना
आजाद होगा होगा, आता है वह जमाना
खूँ खौलने लगा है हिन्दुस्तानियों का
कर देंगे जालिमों का हम बन्द जुल्म ढाना
कौमी तिरंगे झण्डे पै जाँ निसार अपनी
हिन्दु मसीह मुस्लिम गाते हैं यह तराना
अब भेड और बकरी बनकर न हम रहेंगे
इस पस्त हिम्मती का होगा कहीं ठिकाना
परवाह अब किसे है इस जैल और दमन की
एक खेल हो रहा है फांसी पै झूल जाना
भारत वतन हमारा भारत के हम हैं बच्चे
माता के वास्ते है मंजूर सर कटाना

---

१२ बांध ले बिस्तर फिरंगी

बांधले बिस्तर फिरंगी राज अब जाने को है
जुल्म काफी कर चुके पब्लिक बिगड जाने को है
गोलियां तो खा चुके तोप भी हम देखलें
मिटेंगे मुल्क पर फिर इन्किलाब होने को है
वीर बहादुर जेल में हैं कौम के बो ना खुदा
जेलखाने तोड देंगे ये हवा चलने को है
कह रहे हैं बाबा गांधी मानलो शर्तें तमाम
वरना फिर नकशा हुकूमत का पलट जाने को है

आ गये हैं भूले भाई अब कारबारे जंग में।
देख लेना राज शाही बेनकाब होने को है
भारती ने वार अपना कर दिया इंग्लैंड पर।
देख लेना मॅन्चेस्टर भी उजड जानें को है॥

---

१३ विदेशी हुकूमत मिटानी पडेगी

सितमगर की हस्ती मिटानी पडेगी।
हमें अपनी करके दिखानी पडेगी॥
कभी उफ न लायेंगे अपनी जबाँ पर।
मुसीबत सभी कुछ उठानी पडेगी।
बहुत हो चुका अब सहें हम कहां तक॥
ये बेईमानी सारी हटानी पडेगी।
विदेशी बसन और नशे की जिन्स पर।
हमें अब पिकेटिंग करानी पडेगी॥
सत्यग्रही का लेकर व्रत हमें सदा को।
सेवादल की सेना बनानी पडेगी॥
असहयोग बलपर औ' करबन्दि करके।
आजादी की झन्डी उडानी पडेगी॥
करेंगे हम आजाद भारत को अपने।
विदेशी हुकूमत मिटानी पडेगी॥

---

१८ हटो यहां से विदेशी वस्त्रों

हटो यहां से विदेशी वस्त्रों ।
न अब तुम्हारी है चाह हमको ॥
तुम्हीं से भारत हुआ है गारत ।
किया है तुमने तबाह हमको ॥
उद्योग धंधे सभी हमारे ।
किये हैं आकर विनष्ट तुमने ॥
मिटा के चर्खे हमारे करघे ।
है दी मुसीबत अथाह हमको ॥
कहां यहां की महीन मलमल ।
पडा है ढांका में आज फांका ॥
बने निकम्में जुलाहें कोरी ।
मिला यें तुमसे गुनाह हमको ॥
तजेंगे तुमको सजेंगे तन पर ।
पवित्र प्यारा स्वदेशी खद्दर ॥
हमारे गांधी महात्मा ने ।
यें दी है काबिल सलाह हमको ॥
रुई हमारी खरीद सस्ती ।
उसी के कपडे मढे हैं हम पर ॥
हुए धनी तुम गरीब भारत ।
दिखाई गारत की राह हमको ॥
बढाई तुमने बे रोजगारी ।
बनाया तुमने बे हाल भारत ॥
पडे हैं पेटों के आज लाले ।
दिखलाता मुश्किल तवाह हमको ॥

१५. चर्खा

स्वराज्य तो हमको दिलायेगा चर्खा ।
विदेशी हुकूमत मिटायेगा चर्खा ॥
यह धू धू की धुरपद सुनायेगा चर्खा ।
मेरे हौसले अब बढ़ायेगा चर्खा ॥
अगर हिन्द अपना चलायेगा चर्खा ।
तो दुश्मन को चक्कर करायेगा चर्खा ॥
अगर कोई दिल से भुलायेगा चर्खा ।
तो नीचा उसी को दिखायेगा चर्खा ॥
विदेशी को यहां से भगायेगा चर्खा ।
स्वदेशी का डंका बजायेगा चर्खा ॥
सदा मेल के गीत गायेगा चर्खा ।
उदू के जिगर को जलायेगा चर्खा ॥
नहूसत से पीछा छुडायेगा चर्खा ।
हमें चैन से अब बिठायेगा चर्खा ॥
हमें खीर हलुवा खिलायेगा चर्खा ।
हमें दूध क्षीरी पिलायेगा चर्खा ॥
विदेशी तिजारत को खायेगा चर्खा ।
स्वदेशी की जडको जमायेगा चर्खा ॥
जो नित्य अपना घुमायेगा चर्खा ।
तो इग्लैंड को आफतमें लायेगा चर्खा ॥

---

१६ शराब की खराबी

खाना खराब कर दिया बिलकुल शराब ने ।
जो कुछ न देखा था दिखाया शराब ने ॥
बुलबुल की तरह बाग में लेते थे बूए गुल ।
सण्डास नालियों में गिराया शराब ने ॥
हम पीने वाले शरबते सन्दल थे दोस्तो ।
कुत्तों का मूत हमको पिलाया शराब ने ॥
मैदान जंग में थे कभी हम भी सहस्त्रबाहू ।
कीचड की नालियों में गिराया शराब ने ॥
पहन मलमल रमे मैफिल में शाही ।
इज्जत बो कहां अब, नंगा किया शराब ने ॥
पीकर के दूध घी रहते थे हम आजाद ।
काबू में लेकर खो दिया स्वराज्य शराब ने ॥

---

१७ स्वतंत्र होकर

गुलाम रहकर बुरा है जीना, है मरना अच्छा स्वतंत्र होकर ।
सुधाको तजकर गरलका प्याला है भरना अच्छा स्व. होकर ॥
पडी हो हाथोंमें हथकडी गर तो स्वर्ग का सुख न चाहिये फिर ।
नरकमें दुखी निवास निशिदिन है करना अच्छा स्व. होकर ॥
गुलाम रहकर मिले जो घरमें सुस्वाद भोजन तो तुच्छ है वह ।
उपास करके अकेले वनमें विचरना अच्छा स्वतंत्र होकर ॥
जो दासता में मिले उपाधी या मान पदवी तो छोड दीजे ।
घृणा व अपमान के गढेमें उतरना अच्छा स्वतंत्र होकर ॥

---

१८ सरकार विदेशी नहीं रखनी

नही रखनी नही रखनी सरकार विदेशी नही रखनी ॥
जलियां वाले बाग में जाकर, दरवाजों पर मशीन लगाकर
मारे कई हजार, भाइयों नही रखनी ०
अखबारों को बन्द कराकर प्रभात फेरी पर रोक लगाकर
कांग्रेसी किये गिरफ्तार, भाइयों नही रखनी०
महिला बच्चे बेदम पिटवाये फिर उनको जैल भिजवाये
ऐसी है मक्कार, भाइयों नही रखनी ०
जब जर्मन से हुई लडाई हमारे भाई दिये मरवाय
ऐसी है बदकार जालिम, भाइयों नही रखनी ०
देखो कैसी करी सफाई क्यों पकडने रात में आये
नौकर शाही का नहीं इतबार, भाइयों नही रखनी ०
आयी थी व्यापार करन को जहाँगीर की शरन रहन को
बनी गले का हार, भाइयों नही रखनी ०
इस की लूट से बचा न कोई महरा चमार
है यह बेदरकार, भाइयों नही रखनी ०
गरीब किसान लगान बढाकर, मजदूर कर बेकार
भूख से दिये मार, भाइयों नही रखनी ०
स्वराज्य के अब बनो सिपाही, आजादी का झण्डा लेकर
करो देश उद्धार, भाइयों नही रखनी ०

अन्तिम निश्चय.

मुर्दा भारत को जिला जायंगे मरते मरते ।
नाम जिन्दों में लिखा जायंगे मरते मरते ॥
हमको कमजोर समझ बैठे हमारे दुश्मन ।
उनका अभिमान मिटा जायंगे मरते मरते ॥
जुल्म करती है हिन्द पर नौकर शाही ।
उसकी वह चाल मिटा जायंगे मरते मरते ॥
दिलों पर दुश्मनों के अपनी जवां मर्दी से ।
हिन्द का सिक्का बिठा जायंगे मरते मरते ॥
जेल खाने की भी खुश होके बढ़ायेंगे रौनक ।
एक क्या लाखों बना जायेंगे मरते मरते ॥
मातृ भूमि के लिये जान निछावर कर दें ।
सबक भारत को पढा जायेंगे मरते मरते ॥
हैं तो नाचीज ! मगर इतनी जुर्रत रखते हैं ।
हिन्द की बन्दी छुडा जायेंगे मरते मरते ॥

२० माता की मांग

मांगती है माता बलिदान, जवानों उठो देशकी जान
खो चुके बहुत खोचुके वीर, देखते हुए देशकी पीड
क्योंनहीं उठते अधिकअधीर गुलामीकी तोडो जंजीर
क्रांतिका करो आज आह्वान जवानों उठो०
देश हित बाधा विघ्न ढकेल, बढो फिर बढकर भरदो उ
सदाही समझो मरना खेल, चढो फांसीपर संकट झे
जोश में गाओ गौरव गान, जवानों उठो०
मर रहे हैं भूख से सब लोग, फैलते जाते भीषण रोग
भोगते श्रमजीवि दुखभोग, चल रहे अनेक अभियोग
मिट रहा प्यारा हिन्दुस्तान, जवानों उठो०
देख लो ये जालिम सरकार, कर रही कठिन वार पर
सुनो वो तुम्हें रही ललकार, चुनौती कर लो अब स्वीक
हथेली पर रखलो फिर प्राण, जवानों उठो०

संग्राहक व प्रकाशक दादाभाई नाईक. ह

(१०००, प्रति ता० १४-१२-१९३९)

भवानी छाप-खाना हरदा में छपा.